वन्दना गीत

अनादि काल से कर्मों का मैं सताया हूँ,
इसी से आपके दरबार आज आया हूँ।
न अपनी भक्ति, न गुणगान का भरोसा है,
दया निधान श्री भगवान का भरोसा है,
इस आस लेकर आया हूं कर्म कटाने के लिए,
भेंट में कुछ भी नहीं, लाया चढ़ाने के लिये।।१।।

जल न चन्दन और अक्षत पुष्प भी लाया नहीं।
हैं नहीं नैवेद्य, दीप, मैं धूप फल पाया नहीं।
हृदय के टूटे हुए उद्‌गार केवल साथ है,
और कोई भेंट के हित, अर्घ सजवाया नहीं।
हैं यही फलफूल जो समझो चढ़ाने के लिए।
भेंट में कुछ भी नहीं लाया चढ़ाने के लिए।।२।।

मांगना यद्यपि बुरा समझा किया मैं उम्र भर,
किन्तु अब जब मांगने पर बांध कर आया कमर।
और फिर सौभाग्य से जब आप सा दानी मिला,
तो भला फिर मांगने में आज क्यों रक्खूं कसर।
प्रार्थना हैं आप ही जैसा बनाने के लिए
भेंट में कुछ भी नहीं लाया चढ़ाने के लिये।।३।।

यदि नहीं यह दान देना आपको मन्जूर हैं।
और फिर कुछ मांगने से दास ये मजबूर हैं।
किन्तु मुंह मांगा मिलेगा मुझको ये विश्वास हैं,
क्योंकि लौटाना न इस दरबार का दस्तूर हैं।
प्रार्थना हैं कर्म बन्धन से छुड़ाने के लिए।
भेंट में कुछ भी नहीं लाया चढ़ाने के लिए।।४।।

हो न जब तक मांग पूरी नित्य सेवक आयेगा,
आपके पदकंज में 'पुष्पेन्द्र' शीश झुकाएगा।
है प्रयोजन आपको यद्यपि न भक्ति से मेरी,
किन्तु फिर भी नाथ मेरा तो भला हो जाएगा।
आपका क्या जाएगा बिगड़ी बनाने के लिये।
भेंट में कुछ भी नहीं लाया चढ़ाने के लिये।।५।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।